

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-58

श्री

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ व
नक्षिप्राकाशं धुन्यसं नमः
नक्षिप्राकाशं धुन्यसं नमः
नक्षिप्राकाशं धुन्यसं नमः
नक्षिप्राकाशं धुन्यसं नमः
नक्षिप्राकाशं धुन्यसं नमः

उसस्वावाय ॥ ॥ निर्वज
धुन्यनीलाकालममर्त्ति
विजउसीसं धर्ममय्यामा वजसस्व
धमधुली ॥ आकाशजाय न
उसस्ववजकायधमपुला १

यामिना ॥ वेलावनसिवा दूरवः वागमधा अमर्त्तिरुव ॥ अकाश दूरयजा
नी ॥ वलना हा अमाधसिद्धि ॥ ॥ ललागस्य वेलावनः दहिन्धयससंरुवः
यमिभममर्त्तिरुवः वागमधा अमाधसिद्धिः दूरयजकाश ॥ ॥ वेलावनमा
हाकाशिसुवर्धमहाकाश ॥ ॥ धमपिचकाशमलनवकरुवीकुलमर्त्तिः यम
गुलवजाचार्यवजधमधुली ॥ ॥ एलाहनसमालिगासर्वनथागनाहवी ॥

३

नास्वहृवगगतागकेश्वरिगिरुवकुदयःवन्दुधुर्यवकपाभिदिक्कायीगुलाक
 ध्वजममागूमकमरुस्थीकायसर्वनीवर्धुविकीरि॥स्वामजायमःमेप्रियजान
 नःविदुस्यसमनरुदकी॥रुद्रदहिनकुमानकःवामरुद्रअवाजिनाःमसहय
 पितॄ॥अरुद्रकुंभुलि॥असलदहिनवाहुरुकीनारुनीलदधुमाहावलःदहि
 नजानवामजानूमहावली॥उमिषवर्कःरुद्रवर्मस्यथयनीममा॥अथसूर्या

[illegible]

श्री

आत्ममन्त्राय वे वे ला स न द हिन य त्म स र्ग व य धि म न्म म क म र्ग व ड्ड
लं अ भा द य धि म्नी ॥ ५ ॥ पि क ह ला स न न म न्म द वि मा म कि वा य रा पा लु
ला द वि ः ष्ण न व्वा द वि श्र म्प ना या ॥ ६ ॥ ष्ण मि ग र्ह म ह्यु ल ॥ ७ ॥
अ र्ग म्प य स य व ज्ञा न म्प य ष द व ज्ञा वा य धा ग म्प व ज्ञा ष्ण न म्प य स व
जा ॥ ८ ॥ ए र्व वा स य नि का यी भ मि डि मि ग र्ह व द द्धि न प नि का यी व ज्ञा नि

वज्रसत्त्व

३

स्वर्ग म्प र्ग वा य धि म र्ग य नि का यी ला क ध्व न स र्व नी व र्ध वि र्की रि ॥ स म न
रु द म र्ग ष्णी ड्ड ॥ ९ ॥ ए र्व वा व ज्ञा मी न क द हिन वा य ष्णी न क ॥ य धि
म र्ग ल व मी न क ड्ड व ज्ञा ल वि र्णी न क ॥ १० ॥ ष्ण न व्वा द म्प य व ज्ञा
का द म र्की वा ज न म्प ष्ण नी ल द ह्यु वा य धा म्प मा हा व ल ॥ ११ ॥ न क
म म्प ग म वा फा ॥ १२ ॥ दि मि दि गी स र्ग म्प र्ग ॥ १३ ॥ ए र्व वृ प धि म ह्यु र्व

६१

ॐ वज्रसत्त्वः कः उवाच ॥ कथयन्तापमनास्वयम् ॥ कल्याणैव वज्रसत्त्वोक्तं वज्रावा
र्यध्वजशुभं ॥ ६ ॥ सर्वभागासर्वव्याधिसकृष्टविनासनी ॥ धनयज्ञहार्यालक्ष्मि वज्रसत्त्व
सर्वकल्पलियययत्नम् ॥ ७ ॥ ॐ मिथीवज्रसत्त्वाकायस्य कथागमया
फसकसमाप्त्युदं ॥ ८ ॥ ॥ यधर्माद्यादि ॥ ॐ ह्रं वज्रसत्त्वं ह्रं ह्रं ह्रं
हा ॥ ॐ वं वज्रवेलाचनाये ह्रं ह्रं ह्रं हा ॥ ९ ॥ ॥ शुभं ॥ ॥ १० ॥

१० ॐ नमो धी उगनायाये ॥ ॥ ॐ नमो धी सर्वदृष्टवह्यहाविधीः स्वर्गमल
निवात्रक्षि सर्वदवाधुवनप्रगध्वकिचत्रमहाप्रगउयदवयमर्दनीरुगयन
पिठावयकुजाकुसानकाकठकिनीरुयः विध्वसनिपत्रकठकठमकयथाग
विमाठानीरुगवकिउर्गमावहिआमदुगदुगवकिअसीविशासर्वकथागमा
नीवाकसर्वकठनीहन १ ह्रं १ यय १ मध १ ऊरु १ रुद १ रुद १ रुद १ मम सर्वसत्त्वा

श्री

नीचमार्गिकृपणीकृपणं कृपणीहृदयस्वाहा नमिउर्गनायनि
यलिसमाफ॥ ॥ सुहं ॥ यधर्मोद्यादि ॥ १०८६७७७७ ॥
॥ सुहं ॥

उर्गनायति
३

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-58